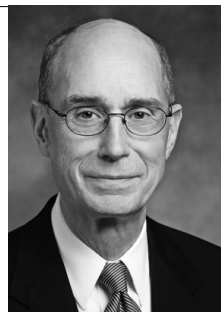

**अध्यक्ष हेनरी बी. आयरिंग द्वारा**
प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

# गवाही और परिवर्तन

सच्चाई की गवाही प्राप्त करना और वास्तव में परिवर्तित होने के बीच में भिन्नता है । उदाहरण के लिए, महान प्रेरित पतरस ने उद्धारकर्ता की अपनी गवाही दी थी कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र था ।

"यीशु उनसे कहा, परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो ?

"शमौन पतरस ने उत्तर दिया,तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है ।

"यीशु ने उसको उत्तर दिया, हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, ने यह बात तुझ पर प्रकट की है" ( मत्ती 16:15–17) ।

और बाद में,उसका पतरस को आदेश,प्रभु ने उसे और हमें सच्चे परिवर्तित होने का मार्गदर्शन और उस परिवर्तन को जीवनभर रखने को दिया । यीशु इसे इस तरह से कहा थाः "जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना" (लूका 22:32)।

यीशु ने पतरस को सीखाया कि अभी भी एक बड़े बदलाव करना है जो कि सोचने,महसूस करने की योग्यता की गवाही से बड़ कर हो,और यीशु मसीह के सच्चे मन फिरने वाले शिष्यों की तरह काम करते हो । ऐसा ही महान बदलाव की हम सब खोज करते है । एक बार हम इसे पा ले, हमें इस बदलाव को इस नाशवर जीवन की अवधि के अन्त तक लगातार करने की आवश्यकता है (देखे अलमा 5:13–14)।

हम अपने स्वयं के अनुभव से और दूसरो को देखकर जानते है कि आत्मिकता के कुछ महान क्षणों की सामर्थ ही काफी न होगी । पतरस ने उद्धारकर्ता को जानते हुए भी यहां उसे आत्मा की साक्षी प्राप्त होने के बाद भी कि यीशु ही मसीह है इन्कार किया था । मॉरमन की पुस्तक के तीन गवाहों को सीधे सीधे उन्हें गवाही दी गई थी कि मॉरमन की पुस्तक ही परमेश्वर का वचन है, और बाद में वे अपने योग्यता में कि जोसफ स्मिथ को प्रभु के गिरजाघर का भविष्यवक्ता के रुप में समर्थन करने से लखड़ने लगे थे ।

हमें अपने हृदयों को फिराने की आवश्यकता है,जैसे अलमा की पुस्तक में वर्णन दिया गया है : और सभी ने इसी बात की पुष्टी की कि उनका हृदय परिवर्तित हो गया है और अब दुष्कर्म करने की उनकी इच्छा नहीं है (अलमा 19:33; देखें मूसायाह 5:2 को भी) ।

प्रभु ने हमें सीखाया था कि जब हम उसके सुसमाचार की ओर पुर्णत : से परिवर्तित होंगे, हमारे हृदय स्वार्थी विचारो से फिरेंगे और दूसरों कों ऊपर उठाने की सेवा में लग जाएंगे जैसे वह अनन्त जीवन में की ओर बढ़ते है । उस परिवर्तन को पाने का प्रयत्न करते हुए, हम यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा प्रार्थना और विश्वास में काम कर नए सृष्टि को बनाना संभव कर सकते हैं ।

हम स्वार्थी होना पर पश्चाताप करने के लिए और अपने आप से ज्यादा दूसरों के लिए मदद करने के लिए विश्वास से प्रार्थना करना आरम्भ कर सकते हैं । इर्षा और घमण्ड़ को एक तरफ रखने की शक्ति के लिए प्रार्थना कर सकते हैं ।

परमेश्वर के वचन के लिए प्रेम के उपहार को प्राप्त करने और मसीह के लिए प्रेम करने के लिए प्रार्थना कुंची हो सकती है ( देखें मरोनी 7:47–48)। दोनों साथ आते हैं । जैसे हम पढ़ते, चिन्तन करते,और परमेश्वर के वचन के लिए प्रार्थना करते हैं, हम उससे प्रेम करने लगेंगे । प्रभु इसे हमारे हृदयों में डालता है । जैसे जैसे हम उस प्रेम का एहसास करते है,हम प्रभु को अधिक से अधिक प्रेम करने लगेंगे । उस के साथ दूसरों के लिए भी प्रेम आएगा कि हमें उन को भी बल प्रदान करने की आवश्यकता होगी जिन्हें परमेश्वर हमारे रास्ते में लाएगा ।

उदाहरण के लिए,हम प्रार्थना कर सकते है उनको पहचानने के लिए जिन्हें प्रभु चाहता है कि उसके प्रचारक शिक्षा दें । पुरे समय के प्रचारक विश्वास के साथ प्रार्थना कर आत्मा के द्वारा जान सकते है कि क्या सीखना और गवाही देनी है । वे विश्वास से प्रार्थना कर सकते है कि प्रभु उन्हें उसके प्रेम का एहसास दिलाएगा उन सभी से जिन से वे मिलते हैं ।

प्रचारक सभी को बपतिस्मे के पानी और पवित्र आत्मा के उपहार के पास नहीं ला सकते जिन से वे मिलते हैं । लेकिन उनके पास पवित्र आत्मा एक साथी के रुप में हो सकती है । उन के सेवकाई के द्वारा और पवित्र आत्मा के सहायता के साथ, प्रचारक तब, समय में, उनके हृदयों को बदल सकेंगे ।

उस बदलाव को बार बार नवीनीकरण कर जैसे वे और हमें अस्वार्थी होकर जीवनभर विश्वास में कार्य कर दूसरो को यीशु मसीह के सुसमाचार के साथ लगातार बल देना होगा । परिवर्तन सिर्फ एक बार की घटना नहीं होनी है या कुछ ऐसा जो कि जीवन की सिर्फ एक ऋतु न होकर बल्कि लगातार होने की प्रक्रिया होनी चाहिए । जीवन परिपूर्ण दिन के आने तक उज्जवल हो सकता है, जब हम उद्धारकर्ता को देखेंगे और पाएगें कि हम उस के तरह बन गए है । प्रभु ने इस यात्रा का वर्णन इस तरह से कियाः'' और वे जो प्रभु की ज्योति है; और वह जो ज्योति को पाता है,और परमेस्वर में निरन्तर बना रहता हो, को अधिक प्रकाश प्राप्त होता है; और वह ज्योति सम्पूर्ण दिन के आने तक और भी अधिक से अधिक तेजवी होती जाती है'' (सि और अनु 50:24) ।

मैं तुम से वादा करता हूं कि यह हम सब के लिए संभव है ।

### इस संदेश से शिक्षा

एलडर डेविड ऐ. बेटनर बारह प्रेरितों के परिषद के ने ''आचार का दृष्टान्त'' का प्रयोग किया सीखाने के लिए कि परिवर्तन लगातार करने की प्रक्रिया है न कि एक समय की घटनाः''नियम पर नियम और आज्ञा पर आज्ञा दूंगा, धीरे धीरे और लगभग अतिसूक्ष्म, हमारे उद्देश्य, हमारे विचार, हमारे शब्द,और हमारे कर्म सीधे सीधे परमेश्वर की इच्छानुसार हो जाते है'' (''Ye Must Be Born Again,'' *Liahona,* May 2007, 19)। विचार करें आचार का दृष्टान्त का प्रयोग को दोहरए उन के साथ जिन्हें आप सीखीते हैं ।परिवर्तन की प्रक्रिया को धीरे से करता हुए दृढ़ता से आगे बढ़ने के लिए हम क्या कर सकते है जोकि अध्यक्ष आयरिंग और अलडर बेटनर दोनों ने चर्चा की थी ?

## युवा

### मेरे हृदय का बदलना

*दान्ने वॅयराडो के द्वारा*

जब मैंने यीशु मसीह के पुनस्थापित सुसमाचार के विषय में पहले सीखा था, मैंने आत्मा के द्वारा उसकी सच्चाई की गवाही को महसूस किया था । प्रार्थना के द्वारा, मेरी गवाही यहां तक और भी सच्ची हो गई थी, और मैंने बपतिस्मा लेने का निर्णाय लिया था ।

बपतिस्मा लेने के तुरन्त बाद,मेरे वार्ड में लोगों ने मुझ से पूछना शुरु किया कि मैं मिशन की सेवा करने के विषय में कैसा महसूस करता हूं । ईमानदारी से, मैं नहीं जानता था कि क्या कहना है । मिशन पर सेवा करने के लिए जाने और अपने परिवार और स्कूल को छोड़ने के विचार से निरर्थक लगाता है ।

फिर एक दिन मैं अपने परिवर्तन के बारे में सोचना शुरु किया । मैंने प्रचारकों का समरण किया जिन्होंने मुझे शिक्षा दी थी, जो धैर्य से मेरे प्रश्नों को जवाब देते थें और मेरी सुसमाचार को समझने में सहायता करते थे । मैंने जाना कि उन की मदद के बिना, मैं कभी भी सच्चा गिरजा को पा नहीं सकता था । जैसे जैसे मुझे उस बात का एहसास हुआ,मेरे सीने में सेवा की कामना पनपने लगी थी । मैं आत्मा की कही बात का एहसास कर सकता था कि मुझे पूरे समय की प्रचारक सेवा करनी चाहिये ।

मैं जानता हूं कि प्रचारक कार्य हमारे स्वर्गीय पिता का कार्य है और कि हम पुन स्थापित सुसमाचार के अदभूत ज्ञान को आत्माओं के पास लाने में मदद कर सकते हैं ।

*लेखक फॉरटल, ब्राजील में रहता था ।*

## बच्चे

### अपनी गवाही को प्रज्जवलित कर उज्जवल होने दें

गवाही को पाना जैसे आग को जलाने के समान है । जैसे हम अग्नि को लकड़ी डाल कर जलाए रखते है,हमें प्रार्थना करना, पश्चाताप करना, दूसरों की सेवा करना, धर्मशास्त्रों का अध्ययन करना,और आज्ञाओं का पालन कर हम हमारी गवाही को उज्जवल करते हैं ।

अधिक सीखने के लिये कैसे आप गवाही को पाते है नीचे दिए गए सूची धर्मशास्त्रों के पढ़े । एक अग्नि को पांच लपटो के साथ बनाएं । जैसे आप धर्मशास्त्र पढ़ते हैं लपटों में रगं भरे । जैसे आप अधिक धर्मशास्त्र पढ़ते है, अग्नि और उज्जवल होती है—और आपकी गवाही !

मुसायाह 2:17
अलमा 5:46
अलमा 32:27
3 नेफी 15:10
यूहन्ना 5:39

© 2015 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/14 । अनुवाद अनुमतिः 6/14 । *First Presidency Message, February 2015* का अनुवाद । Hindi । 12582 294

# यीशु मसीह का विशेषताएं : पापरहित

*प्रार्थनापूर्वक इस सामग्री का अध्ययन करें और खोचकर जाने कि क्या बांटना है । कैसे उद्धारकर्ता का जीवन और भूमिकाऐ आपको उसमें विश्वास को बढ़ने की समझ देगा और उनको आशीषित करेगा जिन का आप भेंट करने वाला शिक्षा संदेश द्वारा ख्याल करते है ? अधिक जानकारी के लिए, reliefsociety.lds.org को देखें।*

**विश्वास, परिवार, सहायता**

*यह भाग यीशु मसीह के विशेषताएं को भेंट करने वाला शिक्षा संदेश की श्रृखांला को दर्शाता है ।*

हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, ही सिर्फ मानवजाति के लिये प्रायश्चित करने की एक मात्र क्षमता रखते थे । ''यीशु मसीह, बिना दोष का मेमना,अपने आप को सूली पर बलिदान होने के लिए दिया और हमारे पापों के भुगतान के लिए कीमत चुकाई,'' अध्यक्ष डिएडर एफ. उकर्टोफ, प्रथम अध्यक्षता में दितीये सलाहकार ने कहा था ।[1] समझते हुए कि पापरहित यीशु मसीह उसमें हमारा विश्वास बढ़ने में, और उसकी आज्ञाओं को पालन करने, पश्चाताप ,और शुद्ध बनाने के प्रयत्न कर सकते हैं ।

"यीशु ...मानव शरीर और आत्मा के अधीन हुआ,परन्तु प्रलोभन के वशीभूत न हुआ ( देखें मुसायाह 15:5),'' एलडर डी.टोट क्रिस्टोफरसन बाहर प्रेरितो के परिषद के ने कहा था । '' हम उस की ओर लौट सकते है ...क्योंकि वह समझता है । वह संर्घष को समझता है,और वह यह भी जानता है कि संर्घष से कैसे जीता जाता है । ...

"...उस के प्रायश्चित की शक्ति हमारे अन्दर के पाप को खत्म कर सकती है । जब हम पश्चाताप करते हैं,उस की बलिदान की महिमा हमारा न्याय और शुद्ध करती है (देखें 3 नेफी 27:16–20) । यह ऐसा है जैसे यदि हम वशीभूत नहीं होते है, जैसे हम प्रलोभन मे नहीं पड़ते है ।

"जैसे जैसे हम दिन प्रतिदिन और सप्ताह दर सप्ताह मसीह के पथ का अनुसरण करने का प्रयत्न करते हैं, हमारी आत्मा निश्चयपूर्ण उसकी उत्र्कष होती है, भीतर का संग्राम दरकिनारे होता है, और प्रलोभन की परेशानी थम जाती है ।''[2]

### *धर्मशास्त्रों के अतिरिक्त*

मत्ती 5:48; यूहन्ना 8:7; इब्रानियों 4:15; 2 नेफी 2:5–6

### *धर्मशास्त्रों में से*

उद्धारकर्ता ने उसके पवित्र पुत्र होने के नाते हमारे पापों का भूगतान किया था,उसका निष्पाप जीवन,गतसमनी में उसकी पीड़ा और उसका लहू बहना, क्रुस पर उसकी मुत्यु और कब्र से उसका पुनरुथान होना था । यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा, हम दोबारा से साफ हो सकते है जैसे हम अपने पापों से पश्चाताप करते हैं ।

राजा बिन्यामीन ने लोगों को यीशु मसीह के प्रायश्चित की शिक्षा दी और फिर पूछा कि वे उसके बातों पर विश्वास कर रहें हैं । ''और वे सब एक स्वर में चिल्ला कर बोले,:... आत्मा ...हमारे हृदयों में महान परिवर्तन कर दिया है जिससे कि हम शैतान के कार्यो को नहीं करेंगे, परन्तु सदैव अच्छे कर्म ही करेंगे ।...

"परमेश्वर की इच्छा पूरी करने और हर एक बात में जो कुछ वह आज्ञा देगा, उन सभी आज्ञाओं को पूरा करने के लिए , परमेश्वर के साथ अनूबंध करने को तैयार है'' (मुसायाह 5:1–2, 5)।

हमारे पास भी राजा बिन्यामीन के लोगों की तरह ही ''महान परिवर्तन'' हो सकता है, जो ''शैतान के कार्यो को नहीं करेंगे, परन्तु सदैव अच्छे कर्म ही करेंगे'' (मुसायाह 5:2)।

**विवरण**

1. Dieter F. Uchtdorf, "You Can Do It Now!" लियाहोना, Nov. 2013, 56 ।
2. D. Todd Christofferson, "That They May Be One in Us," लियाहोना, Nov. 2002, 71 ।

***इस पर विचारे***

शुद्ध होना सम्पूर्ण होने से कैसे भिन्न है ?

© 2015 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/14 । अनुवाद अनुमतिः 6/14 । *Visiting Teaching Message, February 2015* का अनुवाद । Hindi । 12582 294